पत्रांक: Exam/contr/PRNU/1067/24
दिनांक: 23.05.2024

PURNEA UNIVERSITY,PURNIA

Ph.D. Thesis Evaluation Report

1. Name of Examiner : प्रो॰ (डा॰) रवीन्द्र कुमार चौधरी
2. Designation : प्राचार्य एह मैथिली प्राध्यापक
3. Email Address : rabindrachoudhary9@gmail.com
4. Mobile No. : 8986813982, 6206166368
5. Examiner's Specialization : Maithili Natak & Vidyapati
6. Title of Thesis : महाकवि विद्यापति गीतक शास्त्रीय विवेचन
7. Subject : मैथिली
8. Degree : Ph.D.
9. Faculty : मानविकी
10. Name of candidate : श्री राजीव कुमार झा

शोधार्थी राजीव कुमार झा, अपने शोध प्रबंध विषय 'महाकवि विद्यापति गीतक शास्त्रीय विवेचन' को शोध निर्देशक प्रो॰ (डा॰) सुधीर कुमार सुमन के कुशल निर्देशन में सात प्रमुख अध्यायों में विभक्त कर 338 पृष्ठों में विश्लेषण कर शोध निष्कर्ष तक पहुंचा है कि 'महाकवि विद्यापति दुनू विधाक उपयोग करैत छलाह। ई मैथिलीमे मात्र पद्यक रचना करैत रहलाह जे हिनक प्रसिद्धिक प्रमुख कारण अछि। ई छंदशास्त्र आ संगीतशास्त्र दुनूक आधार पर अपन रचना प्रस्तुत करैत छलाह। ई दुनू शास्त्रक निष्णात विद्वान छलाह', जो मुझे विशेष प्रभावित किया।

शोधार्थी राजीव कुमार झा ने अपने शोध के प्रथम अध्याय में 'गीतकाव्यक स्वरूप, पाश्चात्य एवं भारतीय मत, गीतकाव्यक भेद, गीतकाव्यक अनिवार्य लक्षण एवं प्रवृत्ति' का विश्लेषण किया है। दूसरे अध्याय में 'गीतकाव्यक परम्परा, प्राचीन मत, मध्यकालक भावना, आधुनिक कालक प्रवृत्ति, हिन्दी छायावादी गीतक स्वरूप विवेचन' तथ्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। शोधार्थी ने अपने शोध के तृतीय अध्याय में 'विद्यापतिक जीवन वृत्त आ रचना' के विश्लेषण क्रम में स्पष्ट किया है कि 'विद्यापति चारि प्रकारक

P.T.O

Scanned with OKEN Scanner

पद लिखलनि - शृंगार, भक्ति, व्यवहार आ कूट पद। हिनका सँ मैथिली काव्यधारा अनवरत प्रवाहित होइत रहल अछि। मुझे विशेष प्रभावित किया।

अपने शोध के चतुर्थ अध्याय में शोधार्थी ने 'विद्यापतिक गीत योजना, गीत काव्यक प्रमुख तत्वक आधारपर विद्यापतिक गीतक विवेचन, गीतक क्षेत्रमे विद्यापतिक उपलब्धि' का विश्लेषण किया है। शोध के पाँचवें अध्याय में शोधार्थी ने 'विद्यापति गीतमे कृष्णक विवेचन, विद्यापतिक गीतमे राधाक प्रेम उत्कर्ष, विद्यापतिक गीतमे शैव भावनाक मार्मिक तत्व' का वर्णन किया है। छठे अध्याय में शोधार्थी ने 'विद्यापतिक गीतमे रसक विविध रूपक परीक्षण, अलंकार योजना' का विश्लेषण क्रम में स्पष्ट किया है कि 'रसवादी कवि होइतहुँ महाकवि अपन गीतमे अलंकारक रुचिकर योजना कऽ ओकरा अत्याकर्षक बना देने छथि', जो सार्थक एवं न्यायोचित विश्लेषण है।

शोधार्थी ने अपने शोध के सातवें अध्याय में 'विद्यापतिक गीतक हिन्दी, मैथिली, बांग्ला, उड़िया एवं आसामी कवि पर प्रभाव, विद्यापति आ चण्डीदासक गीतक तुलना, विद्यापति आ चन्दा झा गीतक तुलना तथ्यपूर्ण ढंग से किया है। शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार में स्पष्ट किया है कि 'विद्यापति छंदशास्त्र आ संगीतशास्त्रक दुनूक आधार पर अपन रचना प्रस्तुत करैत छलाह। ई दुनू शास्त्रक निष्णात विद्वान छलाह। इसके साथ शोध से संबंधित सभी दस्तावेजों को भी संलग्न किया है, जो शोध के पूर्णता के लिए आवश्यक है।

— अनुशंसा —

उपरोक्त विश्लेषणोपरांत निम्नांकित अनुशंसा की जाती है:

(1) शोधार्थी राजीव कुमार झा को इस शोध कार्य पर इन्हें पीएच-डी. की उपाधि से अलंकृत की जाती है।

(2) उपाधि प्रदान करने से पूर्व इनकी खुली मौखिकी परीक्षा ली जा सकती है।

(3) इस उपाधि हेतु अब इन्हें लिखित परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं है।

28/06/2024

(डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी)
प्रधानाचार्य एवं मैथिली प्रोफेसर
धामदिला महाविद्यालय, धामदिला
पूर्णी सिंहभूम (झारखण्ड)

(9)

PURNEA UNIVERSITY,PURNIA

Ph.D. Thesis Evaluation Report

1. Name of Examiner : Prof. (Dr.) RAM SEWAK SINGH
2. Designation : - PROFESSOR & H.O.D Maithili)
3. Email Address : ramsewak singh 49@gmail.com.
4. Mobile No. : 9430456014
5. Examiner's Specialization : Modern poetry.
6. Title of Thesis : "MAHAKAVI VIDYAPATI GEETAK SHASTRIYA-VIVECHAN"
7. Subject : - MAITHILI.
8. Degree : - ph. D.
9. Faculty : - Humanties
10. Name of candidate : RAJEEV KUMAR JHA

Report

पूर्णियाँ विश्वविद्यालय पूर्णियाँ के मानविकी संकायान्तर्गत मैथिली विषय में पीएच.डी उपाधि हेतु प्राप्त शोध प्रबन्ध "महाकवि विद्यापति गीतक शास्त्रीय विवेचन" शोधकर्ता श्री राजीव कुमार झा द्वारा शोध प्रबन्ध लिखा गया है। शोध प्रबन्ध को परीक्षा की दृष्टि से सांगो-पांग अध्ययन किया। उन्होंने सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध को शोध के दृष्टिकोण से कुल सात अध्यायों में विभक्त किया है तथा अन्त में उपसंहार और परिशिष्ट के साथ-साथ शोध में प्रयुक्त सहायक ग्रंथों के साथ मैथिली साहित्य के श्रेष्ठ प्रकाशित भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं सूची आदि को प्रस्तुत किया है।

शोधार्थी ने प्रस्तावना में विद्यापति के समस्त रचनाओं के संसार का वृहद परिचय प्रस्तुत किया है।

Scanned with OKEN Scanner

विद्यापति मैथिली काव्य धाराक सूर्य समान
मानल जाइत ~~[illegible]~~ छथि। हिनका सँ पूर्व सिद्ध
साहित्य ~~[illegible]~~ उपलब्ध अछि मुदा ओ साहित्यिक कम
धार्मिक बेसी अछि। लोक भाषा मे रचना
करबाक कारणे ओ अत्यधिक लोकप्रिय भेलाह। मैथिली साहित्य मे (प्रथम)
हिनक रचनाक परम्परा मैथिली सँ मैथिली
पर्व धरि चलल। हिनक आविर्भाव सँ अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति
रीति साहित्यके राष्ट्रीय वा अन्तर्राष्ट्रीय विद्यापति क रीतिक
प्राप्त भेल। कवि कोकिल विद्यापति क शोधक मूल उद्देश्य
शास्त्रीय विवेचन करब रहल। शास्त्रीय विवेचन
अछि।

महाकवि विद्यापतिक रीतिक शास्त्रीय ज्योतिरीश्वर
वा रीतिक विवेचन कवि शेखराचार्य ज्योतिरीश्वर
ठाकुरक वर्णरत्नाकर मे वर्णित भेद-प्रभेद तथा पूर्व
समागम मे प्रयुक्त मैथिली रीति सँ सिद्ध होइत
अछि। शोधार्थी एहि प्रकार प्रमाणित करबा लेल
सफल भेलाह अछि।

शोधार्थी अपन शोधक प्रथम अध्याय मे रीति
काव्यक स्वरूप क विश्लेषण कऽ विभिन्न आचार्य
पूर्ण कएल पाश्चात्य एवं भारतीय रीति काव्यक
मतक रचना रीतिकाव्यक भेदोपभेदक स्पष्ट
कएल शोधपूर्ण दृष्टिकोण रचना मे सफल
भेलाह अछि। तत्पश्चात रीतिकाव्यक लक्षण
एवं प्रवृत्तिके विवेचन स्पष्ट कएल गेल अछि
जे निश्चय रूपें शोधार्थीक द्वारा शोधपूर्ण
विश्लेषण अछि। प्रकारा [?] अन्तर्गत वर्णक
भेदोपभेद ओ रागक विश्लेषण छन्द के
एहि भेदोपभेदके स्पष्ट विश्लेषण कएल गेल अछि
तत्पश्चात भिन्न-भिन्न विद्वानक मतक अनुसार
रीति काव्यक स्वरूपक विवेचन प्रस्तुत कएल गेल
अछि। —— P.T.O →

ओझा जी अपन शोधक द्वितीय अध्यायमे
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्राचीन मत, मध्यकालिक
भावना ओ आधुनिक कालक प्रवृत्तिके
विवेचन शोधपूर्ण ढंगसँ कएलन्हि अछि। जाहिसँ
हिन्दी साहित्यक मनीषी लोकनिकेँ अभिव्यक्ति
द्वारा प्रभावित करबाक उपलब्ध प्रमाण देखल
पाइलि। प्रकार लोक ओझा जी स्पष्ट साक्ष्य सँ
के सहारा लैत भिन्न-भिन्न साहित्यकारक प्रमाणित
प्रमाणित करबा अपन अन्तर्गत रीतिका
कएलन्हि अछि। प्रकार भावना,
एहि प्राचीन मत, मध्यकालिक प्रवृत्तिके स्थापित
ओ आधुनिक कालक प्रवृत्तिके सफल भेलाह।
मत के रसवादी रीतिक स्वरूपक
प्रकार संग हिनका ध्यानमे राखि विवेचना प्रस्तुत कएलन्हि।
विश्लेषण ओ आचार्य सभ के
ओझा जी द्वारा लेल ओ समस्त
विद्यापतिक जीवन वृत्त ओ विवेचना कएल
हुनक रचनाक विवाद प्रस्तुत करबामे
नव विचारक सम्पुष्ट अछि। हिनका
निष्कर्ष सावित भेल शोधपूर्ण प्रस्तुति
हिनक बेरा परम्पराक समयमे भिन्न-भिन्न
कएलन्हि अछि। जाहि साहित्यकार ओ इतिहासकार
मैथिली साहित्यक साहित्यकार विचारक
मत समान के रखबाक शोधपूर्ण हिनका
विश्लेषण कएलन्हि अछि। हिनका
द्वारा रचित भिन्न-भिन्न भाषा यथा
संस्कृत, प्राकृत ओ मैथिलीक रचनादिक
कएल वड़ शोधपूर्ण दृष्टि प्रतीत होइत अछि।
ओझा जी चतुर्थ अध्यायमे विद्यापति
क रीति ओझा। रीतिकाव्यक प्रवृत्ति

[illegible]

तत्व पर आधारित विद्यापतिक गीति आलोचनात्मक विवेचना प्रस्तुत कयल गेल अछि। हिनक गीतिकाव्य मे आलोचनात्मक विवेचनाक दृष्टिकोण सँ क्रम लगा-क वर्णनक गीतिक रखल गेल अछि। एतबाइ राधा कृष्णक सेहो सर्वाङ्ग वन्दना ओ शृंगारक न्यायी सेहो विद्या... आलोचनात्मक पूर्ण वर्णक साक्ष्य प्रस्तुत कयल गेल अछि।

पञ्चम अध्याय मे शोधार्थी विद्यापति गीति मे कृष्णक एवं राधाक प्रेम आ विरहक तथा विवेचना कयल गेल अछि। राधाक प्रेम, मिलन, विरह ओ उत्कर्ष वर्णन करैत हिनक गीति मे तीव्र आवेगक मार्मिक गीत के प्रस्तुत कयल गेल अछि। ई समस्त वर्णन भावनात्मक हृदयस्पर्शी करैत अछि।

षष्ठम अध्याय मे शोधार्थी ने एहि विलक्षणता पूर्वक विद्यापतिक गीति मे रसक विविध रूपक वर्णन करैत रस सिद्ध कवि के प्रमाणित करबा मे सफल साबित भेलाह अछि। एतबाइ हिनक सम्पूर्ण गीति मे रसक सेहो अलंकारक योजनाक स्थापित करैत गीतिकाव्य मे आलोचनात्मक विवेचना प्रस्तुत करबा मे सफल भेलाह अछि। एहि तरहे देखला सँ स्पष्ट भय जाइत अछि जे हिनका गीतमे प्रयुक्त एक-एक अलंकारक भावना कायल

छन्दशास्त्र के प्रमाण ...

अध्याय, अथवा रचनाप्रयुक्त करके

हिन्दी समीक्षा, रचना व आलोचना क्षेत्र

का ओझा जी द्वारा सफल योगदान

ओझा जी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन विश्व

जानकारी प्राप्त होती है उनके द्वारा

विद्यापति ठाकुर आलोचनात्मक विवेचन

शास्त्र से लोगों का काम किए हैं।

अतः मैं बिना किसी लिखित परीक्षा आदि के बिना ही उनको पीएचडी. की उपाधि से अलंकृत करने की पुरजोर अनुशंसा करता हूँ। साथ ही अविलम्ब पुस्तकाकार प्रकाशन करने हेतु भी अनुशंसा करता हूँ। जिससे आये दिन अन्यों शोध व शोधार्थियों पाठक को पढ़ने से का अध्ययन सुलभ हो सके।

[illegible] 27.6.24

प्रो. रामसेवक सिंह
पूर्व अध्यक्ष
मैथिली विभाग
ति.मा.भा.वि.वि.
भागलपुर

पत्रांक - Exam/Conf./PRNU/1092/24, dt. 28.05.24 के आलोक में।

PURNEA UNIVERSITY, PURNIA

P-h.D. Thesis Evaluation Report

1. Name of Examiner : Prof.(Dr.) Sudhir Kumar Suman
2. Designation : Professor
3. Email Address : drsks70@gmail. Com
4. Mobile No. : 8340753124
5. Examiner's Specialization : 'Vidyapati and his age'
6. Title of Thesis : 'महाकवि विद्यापति गीतक शास्त्रीय विवेचन'
7. Subject : Maithili
8. Degree : P-h.D.
9. Faculty : Humanities
10. Name of candidate : Rajeev Kumar Jha

यह शोध–प्रबंध शोद्यार्थी राजीव कुमार झा द्वारा पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया में पी.एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया है। शोध का विषय – 'महाकवि विद्यापति गीतक शास्त्रीय विवेचन' बहुत ही व्यापक एवं विस्तृत है। वैसे तो महाकवि विद्यापति पर बहुत हीं कार्य हो चुका है, किन्तु इस शोध–प्रबंध में जो विषय का चयन किया गया है, वह बहुत हीं सारगर्भित एवं अन्वेषणात्मक है।शोद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाचँ अध्याय में विभक्त करते हुए प्रथम अध्याय में गीतिकाव्यक स्वरूप, पाश्चात्य एवं भारतीय मत, गीति काव्यक भेद, गीति काव्यक अनिवार्य लक्षण एवं प्रवृतिपरक विचार प्रस्तुत किया है। द्वितीय अध्याय में गीति काव्यक परम्परा,प्राचीन मत, मध्यकालक भावना,आधुनिक कालक प्रवृति, हिन्दी छायावादी गीतक स्वरूप विवेचन पर अपना विचार व्यक्त किया है। तृतीय अध्याय में महाकवि विद्यापति के जीवन – वृत एवं कृति पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है।चतुर्थ अध्याय में शोद्यार्थी की दृष्टि विद्यापतिके गीत योजना, गीतिकाव्य के प्रमुख तत्व के आधार पर विद्यपति के विभिन्न गीतों का विवेचन करते हुए गीत के क्षेत्र में कविकोकिल विद्यापति के उपलब्धियों को दर्शाया गया है। पाचँम अध्याय में विद्यपति के गीतों में कृष्ण के प्रसंग चर्चा, विद्यापति के गीतों में राधा के प्रेम का चरमात्कर्ष तथा विद्यापति के गीतों में शैव भावना का दिग्दर्शन कराया गया है। षष्ठम अध्याय में विद्यापति के गीत में रस के विविध रूप का परीक्षण के साथ ही साथ अलंकार योजना पर विचार प्रस्तुत किया गया है। सप्तम एवं अन्तिम अध्याय में विद्यापति के गीत का हिन्दी, मैथिली, बंगला, उड़िया तथा आसामी कवि पर प्रभाव, विद्यापति के गीत के साथ चण्डीदास ,मीरा, गोविन्ददास, चंदा झा, के गीतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अन्त में सार रूप में उपसंहार दी गयी है। अतएव यह स्पस्ट होता है कि शोध – प्रबंध की भाषा अति सरल, स्पस्ट तथा सम्प्रेष्णीय है। टंकण – अशुद्धि नगण्य है। मैं राजीव कुमार झा को मानविकी संकाय अन्तर्गत मैथिली विषय में पी–एच.डी. की उपाधि प्रदान किए जाने की अनुशंसा करता हूँ, तथा शोद्यार्थी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

24.06.2024

(प्रो.डॉ.सुधीर कुमार सुमन)
शोध निदेशक सह:प्राचार्य एवं अध्यक्ष
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
पूर्णिया विश्वविद्यालय, पूर्णिया

Scanned with OKEN Scanner